सुनो मन ! सबै शुतिन को सार ।
इक माया इक जीव दुहुँन को, ईश ब्रह्म साकार ।
मायाधीन सनातन जीवहिं, माया ही सों प्यार ।
जीव ब्रह्म को दिव्य अंश है, चारिहुँ वेद पुकार ।
याते याको विषय न मायिक, यह मायिक संसार ।
मायिक जग सों राग द्वेष तजि, रहु गुरु-शरण मझार ।
तजहु 'कृपालु' अपर साधन बल, भजहु युगल सरकार ॥

भावार्थ-

हे मन ! समस्त वेदों का सार सुनो ।

माया, जीव एवं ईश्वर तीन ही तत्व हैं । इन में ईश्वर ही माया एवं जीव का शासक है । यह जीव अनादि काल से मायाबद्ध है और माया के क्षेत्र में ही प्यार कर रहा है किन्तु यदि यह रहस्य समझ में आ जाय कि जीव तो ईश्वर का अंश है और दिव्य है अत: मायिक जगत इसका विषय ही नहीं है तो इस संसार से राग द्वेष रहित होकर वास्तविक महापुरुष ही शरणागति में रहकर राधा कृष्ण की भक्ति द्वारा कृतार्थ हो जायेगा । **'कृपालु'** कहते हैं कि हे मन ! अब तू सब साधनों का बल त्यागकर श्यामा श्याम का भजन कर ।

© 2008 जगद्गुरु कृपालु परिशत्